वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 7 जुलाई, 2024

इस अंक में

- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व परिक्रमा- पृष्ठ : 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा-कविता :पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

आगामी अंक में

- फीजी बात : रचनाएँ और विमर्श दिनांक - 04.08.2024

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान(आई.आई.टी.) जोधपुर में बी.टेक.पाठ्यक्रम का द्विभाषी शिक्षण शुरू

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर, क्षेत्र की मूल भारतीय भाषा हिंदी और अँग्रेजी, दोनों में बी.टेक. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम शिक्षण को लागू करने वाला, पहला राष्ट्रीय महत्व का संस्थान बन गया है। इस अभूतपूर्व पहल के लिए अभिषद (सीनेट) और अभिशासक मण्डल (बोर्ड ऑफ गवरनर्स) ने गहन चर्चा के बाद जून 2024 में प्रस्ताव को सहर्ष मंजूरी प्रदान की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप इस पहल का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषी क्षेत्रों के छात्रों को उनकी मूल भाषा में पाठ्यक्रम में भाग लेने का विकल्प प्रदान करने और सीखने का अनुभव बढ़ाना है।छात्रों की अंग्रेजी दक्षता बढ़ाने के लिए अंग्रेजी सीखने की कक्षाएं भी शुरू की जाएंगी। भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो.अविनाश कुमार अग्रवाल ने कहा कि "प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में पढ़ाने से छात्रों की पाठ्यक्रम सामग्री की समझ और ज्ञान में वृद्धि होगी तथा छात्रों को शैक्षणिक वातावरण में सुचारू रूप से ढलने में मदद मिलेगी।

छात्रों को पाठ्यक्रम की कक्षाएँ शुरू होने से पहले, हिंदी और अंग्रेजी व्याख्यानों में से एक चुनने का विकल्प दिया जाएगा। इन प्राथमिकताओं के आधार पर प्रत्येक कक्षा के दो अनुभाग (सेक्शन) बनाये जाएंगे जिसमें एक ही प्रशिक्षक दोनों अनुभागों को पढ़ाएगा। छात्रों के पास सत्र के दौरान सेक्शन के बीच बदलाव (हिंदी अथवा अंग्रेजी माध्यम) करने का विकल्प भी होगा। दोनों माध्यमों के लिए छात्रों का समान स्तर पर मूल्यांकन किया जाएगा जिससे यह सुनिश्चित होगा कि शिक्षण- अधिगम प्रक्रियाओं में समानता बनी रहे।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में समावेशी शिक्षा की दिशा में यह एक ठोस कदम है जो देश में पहला है। यह सत प्रयत्न अन्य संस्थानों के लिए भी एक मिसाल कायम करेगा जो समाज के सभी वर्गों के लिए समावेशिता में सुधार लाने और उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा तक पहुँच के लिए मूल भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा देगा। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इसकी सराहना करते हुए महत्वपूर्ण कदम बताया है।

रांची में राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला आयोजन, भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में समावेशन - डॉ. अतुल कोठारी (राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास) द्वारा उद्बोधन

भारतीय दर्शन में सृष्टि, विश्व एवं परमेष्टि (आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति) के रहस्यों को तर्क एवं अनुभव के आधार पर सम्पूर्णता से समझने का प्रयास अनादि काल से चला आ रहा है। इस प्रयास द्वारा सृष्टि के मूल में स्थित शाश्वत सनातन तत्त्व की सत्ता पर विचार किया गया है। भारतीय दर्शन के अनुसार एक मूल तत्त्व है जिसे हम ईश्वर या भगवान् आदि नामों से पुकारते हैं। ब्रह्मा जी को सृष्टि का निर्माता कहा गया है।

छान्दोग्य उपनिषद के अनुसार 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' अर्थात "यह समस्त विश्व ही ब्रह्म है।" इसी एक मूल तत्त्व से मनुष्य, जीव-जंतु, पशु-पक्षी, जड़-चेतन आदि का निर्माण हुआ है। यह भारतीय दर्शन में एकत्व की परिकल्पना है जो भारतीय जीवन शैली और चिंतन धारा में शाश्वत रूप से विद्यमान है। इससे एक जीवन दृष्टि निर्मित होती है। इसके चिंतन से मनोविज्ञान जन्मता है। इसी से मूल्य निर्मित होते हैं और इसी को व्यवहार में लाने हेतु आचरण की बात आती है। इस प्रकार का आचरण करने वाले चरित्र और संस्कारों से सम्पन्न मनुष्यों के समूह से संस्कृति का निर्माण होता है।

भारतीय संस्कृति सनातन है। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ सम्यक् कृति है। सनातन का तात्पर्य है- नित नूतन चिर पुरातन अर्थात् जो नित्य नया होते हुए भी अपनी परम्पराओं से जुड़कर अपने उत्स को प्राप्त करता है वही सनातन है। भारतीय संस्कृति के बारे में मार्क ट्वेन का कहना है कि भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मस्थली, इतिहास की माता, पुराणों की दादी और परम्पराओं की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान् एवं सृजनशील सामग्री है उसका भंडार अकेले भारत में है।

हमारे ऋषि-मुनियों और संतों आदि ने समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार विस्तार करके सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से शब्दबद्ध करके, आधारभूत ग्रंथों का निर्माण किया है। चार वेद, अठारह पुराण, एक सौ आठ उपनिषद्, रामायण, महाभारत, जैनों के आगम ग्रंथ, बौद्धों के त्रिपिटक और सिखों का गुरुग्रंथ साहिब आदि। यह सब भारतीय ज्ञान परम्परा का आधारभूत साहित्य है। इसी के प्रकाश में समय-समय पर विभिन्न विषयों पर आधुनिक विद्वानों और महापुरुषों आदि ने भी कार्य किए हैं। इनका साहित्य भी उपलब्ध है। ये प्रमाण भारतीय ज्ञान परम्परा की व्यापकता को दर्शाते हैं जो पूर्णरूप से वैज्ञानिक, सनातन और सर्वस्पर्शी है। विश्व की अधिकतर चुनौतियों और समस्याओं का समाधान एवं नए अवसर भारतीय ज्ञान से प्राप्त हो सकते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में समस्या खड़ी ही न हो या खड़ी भी हो तो समाधान उपलब्ध हो। इस विशेषता के कारण भारतीय ज्ञान न सिर्फ भारत के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है।

साहित्य अकादमी के युवा पुरस्कार-2024 तथा बाल साहित्य पुरस्कार-2024 घोषित

साहित्य अकादमी अध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में हुई साहित्य अकादमी कार्यकारी बोर्ड की बैठक में युवा पुरस्कार-2024 के लिए 23 लेखकों के चयन को मंजूरी दी गयी। हिंदी लेखक गौरव पांडे को उनके कविता संग्रह "स्मृतियों के बीच घिरी है पृथ्वी" के लिए और अंग्रेजी भाषा के लिए सुश्री वैशाली को उनके संस्मरण "होमलेस: ग्रोइंग अप लेस्बियन एंड डिस्लेक्सिक इन इंडिया" के लिए सम्मानित किया जाएगा।

अकादमी ने इस अवसर पर बाल साहित्य पुरस्कारों की भी घोषणा की। देवेंद्र कुमार को बच्चों की कहानियों के संग्रह '51 बाल कहानियां' के लिए चुना गया है। इसके अलावा रंजू हजारिका (असमिया), दीपनविता रॉय (बंगाली), बिरगिन जेकोवा मचाहारी (बोडो), बिशन सिंह 'दर्दी' (डोगरी), गिरा पिनाकिन भट्ट (गुजराती) कृष्णमूर्ति बिलिगेरे (कन्नड़), मुजफ्फर हुसैन दिलबर (कश्मीरी), हर्ष सद्गुरु शेट्टी (कोंकणी), नारायणगी (मैथिली), उन्नी अम्मायम्बलम (मलयालम), क्षेत्रिमायुं सुबदानी (मणिपुरी), भारत सासाने (मराठी), बसंत थापा (नेपाली), मानस रंजन सामल (उड़िया), कुलदीप सिंह दीप (पंजाबी), प्रह्लाद सिंह 'झोरड़ा' (राजस्थानी), हर्षदेव माधव (संस्कृत), दुगल टुडू (संथाली), लाल होतचंदानी 'लाचार' (सिंधी), युवा वासुकी (तमिल), पी चंद्रशेखर आजाद (तेलुगु) और शम्सुल इस्लाम फारूकी (उर्दू) तथा अंग्रेजी लेखिका नंदिनी सेनगुप्ता को उनके ऐतिहासिक उपन्यास 'द ब्लू हॉर्स एंड अदर अमेजिंग एनिमल स्टोरीज फ्रॉम इंडियन हिस्ट्री' के लिए पुरस्कृत करने की घोषणा की गई है। उल्लेखनीय है कि बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं को एक तांबे की पट्टिका वाला एक छोटा संदूक व 50,000 रुपये का चेक प्रदान किया जाएगा।

संपादक की कलम से...

सृष्टि का कोई भी स्थान वाकशक्ति से रिक्त नहीं है। सृष्टि वाक की व्यापकता का द्योतक है। शब्द की उत्पत्ति का कारण वाक ही है। शब्द, वाक के बिना नहीं रह सकता। शब्द वाक और अर्थ वाक दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। वाक से पदार्थ सृष्टि होती है। शब्द वाक से जीवन का संचालन होता है। जीवन का सुख रस में है। अन्न ग्रहण और वाक प्रकटीकरण का माध्यम एक ही रसना या जिह्वा है। साहित्य, संगीत और कला आदि का रस हमें भावविभोर और अभिभूत कर देता है। मन सूक्ष्मतर है और यह प्राण और वाक के बिना नहीं रहता। हमारे भाषाई कर्म का आनंद भी रसमय हो। अतएव हमें अपनी वाक रूपी अंतर्निहित शक्ति का अहसास होना चाहिए और इसका सदुपयोग करना चाहिए।

इस लोक की वाक को सत्यावाम कहते हैं। सूर्य की वाक को बृहती और चंद्रमा की वाक को सुब्रमण्या कहा जाता है। इस क्रम में पृथ्वी की वाक को अनुष्टुप नाम से अभिहित किया जाता है। वाक कला से सृजन होता है। वाक में आघात लगने से तरंगें उठकर कान तक पहुँचती हैं और कर्ण विवर पर धक्का मारती हैं। इस आघात से " संयोग -विभाग – शब्देभ्य: शब्दोत्पत्ति: , के अनुसार शब्द पैदा होते हैं। यही शब्द की उत्पत्ति है। शब्द धक्का देते हैं किन्तु वाक शांत है। वाक को अमृत वाक भी कहा जाता है।

आइये , हम वाक और शब्द साधक बनें तथा पावन बृहद वसुंधरा की भाषाओं की श्रीवृद्धि का सत प्रयत्न करें।

-डॉ. जयशंकर यादव

बदलाव की बयार

हिंदी और भारतीय भाषाएँ ज्ञान-विज्ञान की भाषाएँ हैं। ये बोलियाँ नहीं हैं। भौतिकी, रसायन, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा इसमें दी जा सकती है। विज्ञान पर अंग्रेज़ी का एकाधिकार नहीं है। हिंदी और विभिन्न भारतीय भाषाएँ इस क्षेत्र में मौलिक ज्ञान , असाधारण ज्ञान संपदा और सहज अभिव्यक्ति रखती हैं।

जोधपुर में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा वर्ष 2024 से प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए हिंदी में पाठ्यक्रम, कक्षाएँ और परीक्षा की व्यवस्था, निदेशक डॉ० अविनाश कुमार अग्रवाल की असाधारण पहल है। सुविधानुसार हिंदी माध्यम से अंग्रेज़ी माध्यम में बदलाव की व्यवस्था, दोनों भाषाओं में एक ही स्तर के प्राध्यापकों की उपलब्धता, सहज शब्दावली, समान सुविधाएँ, उचित मूल्यांकन की व्यवस्था और ऐसे दर्जनों महत्वपूर्ण प्रश्नों के समाधान के साथ यह एक पायलट प्रयोग है।

हम सबकी शुभकामना है कि यह प्रयोग विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका के लिए नए रास्ते खोले।

अनिल शर्मा 'जोशी'
अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

विशिष्ट सहयोग

डॉ. अलका सिन्हा
वरिष्ठ साहित्यकार

आपकी प्रतिक्रिया

वैश्विक हिन्दी पत्रिका में आपने मेरे कहानी संग्रह "चलो फिर से शुरु करें" की रेखा भाटिया की समीक्षा छापी है और हमारे शहर में हुए कवि सम्मेलन की रिपोर्ट भी। आपका तहे दिल से धन्यवाद। पत्रिका में गागर में सागर भरा हुआ है। पत्रिका की निरंतरता बनी रहे।

-सुधा ओम ढींगरा, वरिष्ठ प्रवासी लेखिका
संपादक, विभोम स्वर, अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वैश्विक हिंदी पत्रिका के मई अंक को पढ़ने का अवसर मिला और आठ पन्नो ने पूरी दुनियाँ में फैली हिंदी परिवार को एकीकृत कर गागर में सागर भरने का कार्य किया है। संपादक मंडल द्वारा सही विषय चुनाव, प्रस्तुतिकरण और सुंदर साज सज्जा, पूरी टीम के सुंदर कार्य को दिखाता है। विश्व भर में होने वाले हिंदी कार्यक्रमों की जानकारी मिली। सभी प्रवासी भारतीयों के लिए यह गर्व का विषय है कि वह वैश्विक हिंदी पत्रिका के माध्यम से अपने भारत माँ के अंक में सिमट रहे हैं। धन्यवाद सहित।

-मोनी बिजय (मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच, ललितपुर काठमांडू नेपाल

वैश्विक हिंदी पत्रिका का जून अंक हिंदी प्रेमियों के लिए एक नई ऊर्जा लेकर आया है। विदेशी धरा पर भोजपुरी का अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव, मन को आह्लादित करता है। विश्व पटल पर हिंदी प्रेम की गतिविधियाँ उत्साहवर्धक हैं। विश्व परिक्रमा बड़ी सूचनाएँ दे रही है। साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के बदलते परिदृश्य और शोध के सन्दर्भ में व्यवहारिक जानकारी सटीक है। सम्पादन टीम को अनंत मंगलकामनाएँ।

-श्रीकान्त सिंह,लखीमपुर खीरी, उ.प्र.

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा प्रकाशित होने वाली वैश्विक हिंदी पत्रिका का जून 2024 का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक द्वारा विश्व के अलग-अलग देश में हिंदी के क्षेत्र में हो रहे काम की विस्तृत जानकारी तो मिली ही, साथ ही विश्व में हिंदी के बढ़ते वर्चस्व का भी बोध हुआ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले अंकों में वैश्विक हिंदी पत्रिका, इसी प्रकार विश्व को एक गांव में परिवर्तित करते हुए हिंदी में होने वाले कार्यों को बढ़ावा देती रहेगी और हिंदी कुटुंब के बीच लोकप्रियता के नित नए आयामों को छूने में सफल होगी। संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

-डॉ. धनेश द्विवेदी, उप-संपादक, राजभाषा भारती

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन, भारतीय भाषा मंच और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

(रिपोर्ट लेखन - डॉ. जयशंकर यादव)

विदेश में हिंदी नाटक
(2 जून 2024)

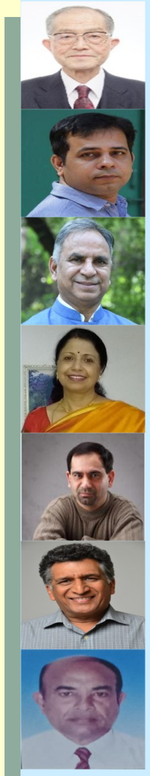

ओसाका विश्वविद्यालय जापान के एमिरेट्स प्रोफेसर एवं पद्मश्री से सम्मानित प्रो० तोमियो मिजोकामि की अध्यक्षता में यह संगोष्ठी आयोजित हुई।हिन्दी,संस्कृत,बंगला और पंजाबी आदि भाषाओं के ज्ञाता प्रो० मिजोकामि जी ने कहा कि भारत में नाटक की बहुत समृद्ध और प्राचीन परंपरा है। हमने अपने अनुभव से पाया है कि नाटक उच्च भाषा शिक्षण माध्यम है। उन्होने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली के तत्वावधान में अपने द्वारा मार्च 2003 में भारत महोत्सव में निर्देशित एवं जापानी छात्रों द्वारा अभिनीत नाटक " बुरे फँसे मोहब्बत में, के वीडियो की प्रभावोत्पादक झलकियाँ भी दिखाई। मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक श्री चितरंजन त्रिपाठी का कहना था कि लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व भरत मुनि का नाट्य शास्त्र दुनियाँ के लिए दिग्दर्शक और वसुधैव कुटुंबकम का परिचायक है। हमारे संस्थान द्वारा अमृत महोत्सव वर्ष में 1588 नाटकों का इतने ही स्थानों और इतने ही कलाकारों द्वारा प्रदर्शन कर कीर्तिमान बनाया गया है। इन कार्यक्रमों से अनेक विचार और सुझाव मिले। वैश्विक हिन्दी परिवार के इस आभासी कार्यक्रम में दुनियाँ के विभिन्न देशों के विद्वान,चिंतक,प्राध्यापक ,शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

आरम्भ में साहित्यकार श्रीमती अलका सिन्हा द्वारा स्वागत किया गया। भारतीय संसद टी वी के मशहूर निवेदक एवं लेखक श्री प्रतिबिंब शर्मा द्वारा विद्वतापूर्ण संचालन का दायित्व संभाला गया। हिन्दी राइटर्स गिल्ड कनाडा की सह संस्थापक साहित्यकार डॉ० शैलजा सक्सेना ने कहा कि विदेश में हम सजगतापूर्वक "अंधा युग,सदृश नाटकों का मंचन कर भारतीय भाषा संस्कृति का संरक्षण संवर्धन करने का भरसक प्रयास करते हैं। अब नए नाटकों का आना और प्रभाव छोड़ना जरूरी है। ब्रिटेन से जुड़े मशहूर नाटक लेखक और निर्देशक श्री कृष्ण टंडन ने कहा कि नाटक के लिए जुनून चाहिए। बेशक संसाधनों की कमी है किन्तु गंभीर हिन्दी नाटकों को देखने के लिए लोगों को जुटाना चाहिए। अमेरिका के सिएटल से जुड़े नाटककार श्री अगस्त्य कोहली ने कहा कि दशकों पूर्व यहाँ आने के बाद अपनी तरंग दैर्ध्य वाले लोगों को जोड़कर अपने पिताजी द्वारा लिखित नाटक "हत्यारे, का मंचन किया जिससे उत्साहवर्धन हुआ। सिनेमा आने के बाद विश्व में नाटकों का चलन कम हुआ। अब नाटकों के दुहराव की नहीं बल्कि नएपन की निहायत जरूरत है। मॉरीशस से जुड़े सुप्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि मॉरीशस में गिरमिटिया के बाद रामायण और हनुमान चालीसा आदि पर आधारित हिन्दी नाटकों की समृद्ध परंपरा है। यहाँ जनता की भारी मांग पर अङ्ग्रेज़ी और फ्रेंच नाटकों को कड़ी टक्कर देते हुए हिन्दी नाटकों ने विशेष प्रभावशाली स्थान बनाया। नई पीढ़ी के न जुड़ने से अब स्थिति डांवाडोल है।वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी वक्ताओं का समादर करते हुए नाटक का व्यावसायीकरण करने एवं ब्रिटेन आदि की तरह कलाकारों को उच्चतर पारिश्रमिक देने की आवश्यकता बताई। उन्होने सुझाव दिया कि कहानीकारों एवं प्रवासी लेखकों की रचनाओं पर नए नाटकों की अपार संभावनाएं हैं। अंत में कनाडा से नाटककार श्री पीयूष श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद दिया गया।

न्यूजीलैंड में हिंदी : विभिन्न प्रयोग
(9 जून 2024)

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के सान्निध्य में उपर्युक्त विषय पर आभासी संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें दुनियाँ के विभिन्न देशों के विद्वान,चिंतक,प्राध्यापक ,शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे। श्री जोशी ने कहा कि न्यूजीलैंड में संगठनात्मक रूप से हिन्दी के अभिनव प्रयोग हुए हैं। संप्रति नेटवर्किंग की निहायत जरूरत है। न्यूजीलैंड के मूल निवासियों,समुदायों एवं युवाओं में हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं के संरक्षण -संवर्धन को प्रौद्योगिकी की मदद से त्वरित गति दी जाए। हम युवाओं के भटके हुए भविष्य को सँवार सकते हैं। न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी की निदेशक डॉ०पुष्पा वुड ने हर्षातिरेक से कहा कि अपनी भाषा न बोलने पर मुझे घुटन महसूस होती थी। उच्चायोग द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस आदि कार्यक्रमों में सहभागिता, अपार आत्मसंतुष्टि देती है।न्यूजीलैंड में एकजुट होकर यहाँ की भाषा "मावरी, और "फ़िजी बात, को प्रोत्साहित करना श्रेयस्कर होगा।

आरम्भ में साहित्यकार डॉ० बरुण कुमार द्वारा स्वागत किया गया। न्यूजीलैंड में विश्व कीर्तिमान स्थापित करने वाली ई -पत्रिका "भारत दर्शन, के संपादक श्री रोहित कुमार हैप्पी द्वारा शायराना अंदाज में संचालन का दायित्व संभाला गया।न्यूजीलैंड में बाल विकास की निदेशक एवं पहचान पत्रिका की संपादक रूपा सचदेवा ने कहा कि यहाँ हिन्दी शिक्षण सुचारु रूप से चल रहा है किन्तु सरकारी स्तर पर लागू करना बेहतर होगा।न्यूजीलैंड की वरिष्ठ हिन्दी लेखिका प्रीता व्यास ने कहना था कि यहाँ संचार के साधनों की मदद लेकर सामूहिक सत प्रयत्नों से हिन्दी को जिंदा एवं जीवंत रखना अत्यंत आवश्यक है। भारतीय उच्चायोग न्यूजीलैंड में द्वितीय सचिव श्री दुर्गा दास का मन्तव्य था कि वे यहाँ भारतीय भाषा संस्कृति और राष्ट्रहित में सेवाएँ देने हेतु पूरे मनोयोग से तत्पर हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के मानद सचिव डॉ० नारायण कुमार ने कहा कि हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में न्यूजीलैंड का विश्व मानचित्र पर प्रमुख स्थान है। हम सब मिलकर इस पुनीत कार्य को गति प्रदान करें। प्रवासी संसार के संपादक डॉ० राकेश पाण्डेय का कहना था कि स्थानीय भाषाओं के साथ समन्वय कर हिन्दी के कार्य को चलाया जाए। यूक्रेन से प्रो० यूरी का सुझावात्मक मन्तव्य था कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद यूक्रेन की तरह न्यूजीलैंड के मूल निवासियों में हिन्दी को पर्यटन के साथ बढ़ावा दिया जाए। आस्ट्रेलिया से जुड़े लेखक श्री सुभाष शर्मा ने कहा कि हिन्दी को बात चित में बढ़ावा दिया जाए। श्री कृष्णा बाबू ने कहा कि रुचिकर साहित्य को प्रोत्साहित किया जाए। अंत में फिजी में निदेशक रह चुके डॉ० संतोष मिश्र द्वारा आभार प्रकट किया गया।

कंप्यूटर और भाषा कार्यशाला : तकनिकी दुनियाँ में डेटा का रहस्यजाल (16 मई 2024)

कंप्यूटर और भाषा कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध भाषा तकनीकीविद एवं माइक्रोसॉफ्ट भारत में सुगम्यता एवं स्थानीयकरण के निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच जी ने विषय की बारीकियों को प्रभावी पावरप्वाइंट से समझाया। इससे देश -विदेश से जुड़े विद्वान विदुषियों,भाषा प्रेमियों और शोधार्थियों आदि ने ज्ञानार्जन किया।कार्यक्रम में रेल मंत्रालय के निदेशक डॉ० बरुण कुमार द्वारा सान्निध्य प्रदान किया गया। आरम्भ में डॉ०जयशंकर यादव द्वारा आत्मीयतापूर्क स्वागत किया गया। ततपश्चात लेखक एवं तकनीकीविद डॉ० सुरेश कुमार "उरतृप्त, द्वारा संचालन संभाला गया।

अपनी शानदार सचित्र प्रस्तुति देते हुए श्री बालेंदु जी ने बताया कि डेटा का इतिहास लगभग बीस हजार वर्ष पुराना है।आज की दुनियाँ में डेटा डिजिटल अर्थव्यवस्था का नया तेल, है। डेटा केवल आंकड़ों का भ्रम नहीं है बल्कि इसमें तथ्य, धारणाएँ, अंक, मात्रा और माप आदि निहित हैं। इसमें कंप्युटेशनल पावर, इंटरनेट, क्लाउड और डेटा आदि विविध आयाम हैं। डेटा, वैश्विक स्तर पर सामरिक और आर्थिक विकास के मूल्यवान सूत्र और आय के सशक्त स्रोत हैं। डेटा के मुख्य रूप से मात्रात्मक और गुणात्मक दो प्रकार हैं।ये केवल आंकड़े नहीं बल्कि सर्वसमावेशी हैं। इसके मुख्यतया संरचनात्मक और असंरचनात्मक दो स्वरूप हैं। डेटा की अथाह और अपरिमित दुनियाँ को बिग डेटा, कहते हैं। बक़ौल प्रधानमंत्री, भारत में डेटा सबसे सस्ता है। हमारे दैनंदिन जीवन में सुबह से शाम तक व्हाट्सएप, स्मार्टफोन काल, फेस बुक, ई मेल, सर्च इंजिन, यू ट्यूब और अमेज़न आदि डेटा के ही अंग हैं। हर मिनट में 40 लाख पोस्ट, 43 लाख ट्यूब यूजर, गूगल पर 63 लाख सर्च और इंटरनेट पर लगभग 2 करोड़ लोग जुड़ते हैं। डेटा से बेहतर सेवाओं के रूप में सकारात्मक प्रभाव किन्तु असुरक्षित निजता के रूप में नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। गूगल हमारे बारे में अपरिमित जानकारी रखता है जैसे –उम्र, आय,योग्यता,भाषा,लिंग,पैतृक स्थिति,परिवार,रिश्ते,घरेलू स्वामित्व, डिवाइस, लोकेशन, सर्च का समय, घर की घटनाएँ, वेबसाइट, ओपेरेटिंग सिस्टम, ई मेल सामग्री, प्रॉपर्टी खरीद, यात्रा,विज्ञापन, फोटो, देखे गए टी.वी. कार्यक्रम और फोन कॉल आदि की बातें इत्यादि।इस प्रकार डेटा का अद्भुत संसार है। नाटक उच्च भाषा शिक्षण माध्यम है।

वैचारिक हस्तक्षेप के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो०राकेश गौतम ने डेटा में निवेश ,प्रो० राजकुमार शर्मा ने डेटा और भाषा विज्ञान ,प्रो० आदित्य झा ने डेटा का निस्यंदन तथा प्रो० ओमप्रकाश ने डेटा और अनुवाद के संबंध में जानने की जिज्ञासा प्रकट की जिसका बालेंदु जी ने उत्तर देते हुए अनुबंधों की तरफ ध्यान आकृष्ट किया। वयोवृद्ध भाषाविद प्रो० जगन्नाथन ने ग्लोबल डाटा को जरूरी बताया। सान्निध्यप्रदाता के रूप में डॉ० बरुण कुमार ने डेटा एवं तकनीकी सुविधाओं से निर्भरता बढ़ने एवं मेधा पर पड़ने वाले प्रभावों पर चिंता प्रकट की और संज्ञानात्मक क्षमताओं के अनुरक्षण की निहायत जरूरत बताई।अंत में श्री राजीव रावत द्वारा धन्यवाद दिया गया।

विदेश में योग की प्रासंगिकता
(23 जून 2024)

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान श्री धनंजय कुमार ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभ कामनाएँ देते हुए कहा कि योग विविधता और एकाग्रता का द्योतक है। योग ने व्यापक प्रभाव छोड़ा है और इससे दुनियाँ का सभी समाज जुड़ा है। योग आधारित शिक्षा आमूल परिवर्तन ला सकती है। हम ऊर्जा, उत्पादन,वितरण और उपयोग आदि पर समुचित नियंत्रण पा सकते हैं।मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय दूतावास सूरीनाम में सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक एवं योग विशेषज्ञ डॉ० सोमवीर आर्य का कहना था कि हम लोग खुद योग का नियमित अभ्यास करें और अन्य को भी प्रेरित करें। योग के साथ न्याय होगा तो व्यवहार में दिखेगा और योग: कर्मसु कौशलम, चरितार्थ होगा। योग में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के महासचिव श्री श्याम परांडे ने कहा कि दशको पहले दूसरे देशों जैसे चीन कोरिया और थाई आदि में योग स्टूडिओ खूब दिखाई देते थे, मानों यह उन्हीं से उद्धत है।ध्यातव्य है कि यह भारत के ऋषियों की देन है जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी 2014 में अंतरराष्ट्रीय रूप में मान्यता दी।जब हम स्वास से स्वास,स्वर से स्वर और कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तो मन से मन भी मिलता है। महिला पतंजलि समिति दिल्ली की अध्यक्ष सुश्री सविता तिवारी ने कहा कि पतंजलि योग समिति का कार्य स्तुत्य है जिससे समूची दुनियाँ में हर क्षेत्र में योग, सम्मान सहित पहुंचा है।

इस अवसर दिल्ली के द्वारका केंद्र की संरक्षक श्रीमती सरोज शर्मा ने अवगत कराया कि यहाँ रोज सुबह योग और प्राणायाम की नि:शुल्क हाइब्रिड कक्षाएं संचालित होती हैं जिससे अनगिनत लोग लाभान्वित होते हैं।इसके अलावा प्रत्येक रविवार को विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा अनेक बीमारियों का निदान किया जाता है। आरम्भ में साहित्यकार श्री अनिल जोशी द्वारा आत्मीयतापूर्क स्वागत किया गया।योग विशेषज्ञ श्री दीप चन्द्र पंत द्वारा संचालन का बखूबी दायित्व संभाला गया। शुरुआत में श्री पंत ने आभासी रूप में सभी से भ्रामरी और अनुलोम विलोम आदि का बड़े ही शालीन ढंग से विधिवत अभ्यास कराया। इस अवसर पर देश विदेश से जुड़े विशेषज्ञों का अभिनंदन किया गया जिनमें प्रमुख थे – श्रीमती स्नेहलता रावत –अमेरिका , कर्नल नारायण पाण्डेय ,दीप चंद पंत, श्री आर एस भण्डारी और निरुपमा भण्डारी ,श्री शिव कुमार, ज्योति पंत,अनूप शंखधोषक ,बृंदा शर्मा, दीप शिखा और दिव्या माथुर आदि। अंत में दिल्ली से साहित्यकार डॉ अरविंद कुमार "पथिक, द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

हिंदी के मेधावी विदेशी छात्र

(30 जून 2024)

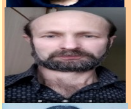
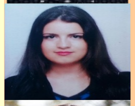

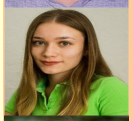

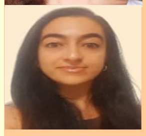

जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के प्रो॰वेद प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में "हिन्दी के मेधावी विदेशी छात्रों के साथ संवादात्मक संगोष्ठी आयोजित की गई। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होने अनेक चुनौतियों के बावजूद विदेशी छात्रों को हिन्दी सीखने एवं भारतीय भाषा संस्कृति तथा ज्ञान परंपरा को जानने व भविष्य में नई ऊँचाइयाँ छूने हेतु शुभ कामनाएँ दीं और देवनागरी के रुचि सहित प्रयोग को बढ़ावा देने पर प्रसन्नता प्रकट की । यूक्रेन के कीव विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो॰ यूरी बोत्विंकिन का कहना था कि हिन्दी भाषा और साहित्य का उनके देश पर समरसतायुक्त गहरा प्रभाव है। अब ऑनलाइन अच्छी सामग्री मिल जाती है किन्तु हिन्दी को उर्दूकरण से बचना चाहिए। मास्को राजकीय विश्वविद्यालय की प्रो॰ ल्यूदमिला खोखोलोवा ने सहर्ष कहा कि विद्यार्थी हिन्दी से नई समृद्ध संस्कृति और नए विचार सीखते हैं जिससे नए दृष्टिकोण मिलते हैं। उन्होने उक्रेन के कीव विश्वविद्यालय की सँजोयी यादों को प्रकट करते हुए प्रो॰ यूरी से सहमति और आत्मीयता जताई।

बुल्गारिया की सोफिया यूनिवर्सिटी की विद्यार्थी स्तेफनी निकोलोवा दिमित्रोवा ने हिन्दी सीखने पर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की और "मेरा प्रिय गाँव , शीर्षक से भारत -भारतीयता पर आधारित प्राकृतिक चित्रण सहित स्वरचित कविता सुनाई। कनाडा की विद्यार्थी खुशी जेटली ने अपने दादा -दादी और अभिभावकों से हिन्दी सीखने पर भावात्मक लगाव का इजहार किया और कनाडा के हिन्दी राइटर्स गिल्ड के पठन पाठन के सत प्रयत्नों की सराहना की तथा हिन्दी को साहित्य, संगीत और कला से जोड़ते हुए सर्वांगीण विकास में सहायक बताया। वियतनाम के हो ची मिन्ह सिटी के छात्र फाम डिंह डींग हुंग ने कहा कि शुरू में कठिनाई आई लेकिन बाद में शब्दकोश आदि की मदद से मार्ग प्रशस्त हुआ और अब बहुत आनंद आता है। यूक्रेन में एम ए हिन्दी की छात्रा दारिया माज़ूरेंको के उदगार थे कि हिन्दी सीखकर हम भारतीय भारतीय त्योहारों को मनाते हैं और फिल्में देखकर नाटकों में अभिनय भी करते है तथा सुंदर और अलंकारिक गाने सीखकर गाते हैं जिससे जीवन में सार्थक मुस्कान आती है। कीव ,यूक्रेन के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की छात्रा वलेरिया ने पीपीटी के माध्यम से सुंदर सचित्र दिखाया कि वे लोग हिन्दी सीखने के साथ विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा दिवस ,स्वतन्त्रता दिवस और दीपावली आदि त्योहार हर्षोल्लास से मनाते हैं। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय की छात्रा युज़ुकी सासाकी ने कहा कि मुझे हिन्दू संस्कृति, विशेष रूप से समृद्ध शादी -विवाह पद्धति ,रीति- रिवाज, खान- पान ,रहन- सहन आदि पसंद है और हिन्दी सीखकर भारत के लिए नौकरी करना चाहती हूँ।मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी से छात्रा अलीना वोरोबिएवा ने कहा कि हिन्दी सीखने के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रेरणा और प्रोत्साहन की निहायत जरूरत है। विद्यार्थियों ने कुछ श्रोताओं के सवालों के समुचित उत्तर दिये। प्रो॰ तात्याना ने कहा कि उनके विद्यार्थी हिन्दी फिल्मी गानों की भाषा और मुहावरों से बहुत प्रभावित हैं । ब्रिटेन से डॉ॰ अजय त्रिपाठी ने विदेशी छात्रो को पर्यटन हेतु अपनी ओर से मेजबानी का खुला आमंत्रण दिया। जापान से जुड़े पद्मश्री प्रो॰ तोमियो मिजोकामी ने अपने छात्र जीवन में हिन्दी सीखने में आने वाली कठिनाइयों को याद करते हुए सुझाया कि विद्यार्थी समुचित तकनीकी का अधिकाधिक सदुपयोग करें ।

आरम्भ में भारत से साहित्यकार डॉ॰ बरुण कुमार द्वारा स्वागत किया गया। पुर्तगाल से प्रो॰ शिव कुमार सिंह ने संचालन का दायित्व संभाला। अंत में मैड्रिड से प्रो॰ पूजा अनिल द्वारा आत्मीयता से धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समूचे कार्यक्रम प्रत्येक रविवार विश्व हिन्दी सचिवालय ,अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद,केंद्रीय हिन्दी संस्थान,वातायन और भारतीय भाषा मंच के सहयोग से वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन में संचालित होते हैं।ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर द्वारा कार्यक्रम प्रमुख की भूमिका निभाई गई। श्री कृष्णा कुमार द्वारा तकनीकी ज़िम्मेदारी का निर्वहन किया गया। इसमें पिछले लगभग 4 वर्षों से विभिन्न देशों के विद्वान,चिंतक,प्राध्यापक ,शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि उत्साह से जुड़ते हैं। ये कार्यक्रम "वैश्विक हिन्दी परिवार शीर्षक से "यू ट्यूब" ,पर भी उपलब्ध है। *-(रिपोर्ट लेखन - डॉ. जयशंकर यादव)*

'वातायन-यूके' द्वारा रूसी साहित्यकार-अंतोन चेखव पर संगोष्ठी

प्रवासी साहित्यकार दिव्या माथुर के संयोजन में 'वातायन-यूके' के तत्त्वावधान में 'विश्व साहित्य के नगीने' शृंखला के अंतर्गत रूस के महान साहित्यकार अंतोन पावलविच चेखव की कहानियों पर सारगर्भित चर्चा की गई। इस संगोष्ठी(190) की प्रस्तोता थीं- ब्रिटेन की आईटी प्रोफेशनल और लेखिका ऋचा जैन। पत्रकार और आलोचक-श्री आलोक श्रीवास्तव अध्यक्ष थे जबकि मुख्य अतिथि थीं- मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी की प्रो. ल्यूदमिला खोखलोवा।

रूस में इंजीनियर और अनुवादक प्रगति टिपणीस द्वारा सुश्री ऋचा जैन के साथ सह-वाचक के रूप में चेखव की दो कहानियों 'एक बिना शीर्षक की कहानी' और 'बुढ़ापा' का सस्वर वाचन किया गया। 'एक बिना शीर्षक की कहानी' का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद सुश्री ऋचा जैन ने किया था जबकि 'बुढ़ापा' कहानी का अनुवाद भी प्रगति टिपणीस द्वारा स्वयं किया गया था। दोनों कहानियाँ मानवीय स्पर्श से लबरेज़ थीं। 'एक बिना शीर्षक की कहानी' का घटनाक्रम एक चर्च के मुख्य पादरी, भिक्षुओं, शराबियों और एक उच्छृखल स्त्री के इर्द-गिर्द घूमता है। पादरी की संगीत और छंद-रचना में ख़ास दिलचस्पी है। दूसरी कहानी 'बुढ़ापा' का मुख्य पात्र एक राजकीय शिल्पकार उज़्लिल्कोफ है जिसको एक चर्च के कब्रिस्तान को बहाल करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। वह उस स्थान से कोई 18 वर्ष पहले परिचित रहा था; बहरहाल, अब उस स्थान का हुलिया बिल्कुल बदल चुका था। वह वहाँ दोबारा आकर स्थान और चीज़ों का जायज़ा बड़े ही फलसफाना अंदाज़ में लेता है जिसमें व्यंग्य-कटाक्ष का भी पुट है। कहानी मनोरंजक ढंग से आगे बढ़ती है तथा श्रोताओं को आद्योपांत बाँधे रहती है।

संगोष्ठी की मुख्य अतिथि ल्यूदमिला खोखलोवा ने दोनों कहानियों के भाव-पक्ष और कला-पक्ष पर बारीकी से प्रकाश डाला। उन्होंने दोनों अनुवादकों के अनुवाद-कौशल की सराहना करते हुए कहा कि चेखव की कहानियों में सांसारिक जीवन का जीवंत विवरण मिलता है तथा उनके द्वारा वर्णित सांसारिक जीवन और मनुष्य की प्रलोभन-प्रवृत्ति आदि उजागर होती है। संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री आलोक श्रीवास्तव ने भी ऋचा और प्रगति की अनुवाद-कला की प्रशंसा करते हुए कहा कि चेखव की कहानियों में 120 वर्षों पहले के संसार और जीवन का चित्रण मिलता है। यद्यपि उन्होंने कोई उपन्यास नहीं लिखा तथापि उनकी सारी कहानियां एक उपन्यास के ही विस्तार जैसी लगती हैं।

संगोष्ठी के टिप्पणीकारों में अन्यों के साथ-साथ, सुश्री दिव्या माथुर और सुश्री राजश्री शर्मा मुख्य थीं। सुश्री शर्मा ने बताया कि चेखव के लेखन में हमें दु:ख, पीड़ा, अतृप्ति और अधूरापन मिलता है। मंच पर आभासी उपस्थित प्रबुद्ध श्रोताओं में तोमियो मिज़ोकॉमी,जापान अनूप भार्गव,अमेरिका,जय वर्मा, अल्पना दास,अरुणा अजितसरिया,कैम्ब्रिज, डॉ. जगदीश व्योम, डॉ॰ मनोज मोक्षेंद्र, डॉ॰ जयशंकर यादव आदि भारत से थे।श्री कृष्णा कुमार ने बखूबी तकनीकी दायित्व निभाया। संगोष्ठी के समापन पर सुश्री ऋचा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(रिपोर्ट लेखन --डॉ. मनोज मोक्षेंद्र)

हमारे असमतल जीवन में सभी को अपने हिस्से का आसमान नहीं मिलता: राजेंद्र दानी की कहानियों पर ख़ास चर्चा

सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र दानी जी के साहित्यिक अवदान पर 'वातायन-यूके' के तत्त्वावधान में 26 जून को व्यापक चर्चा हुई। वातायन के आभासी मंच पर इस संगोष्ठी के आयोजन में वैश्विक हिंदी परिवार का भी सक्रिय योगदान रहा।

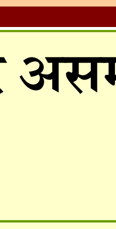
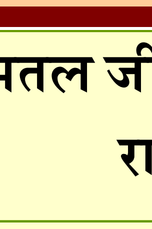
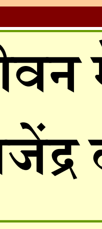

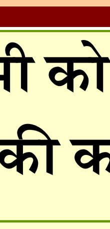

सुविख्यात साहित्यकार श्री लीलाधार मंडलोई ने अध्यक्षता की जबकि महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफेसर, डॉ॰ रोहिणी अग्रवाल तथा सेवानिवृत्त प्रो॰ शंभू गुप्त विशिष्ट वक्ता थे।

सूत्रधार सुश्री आस्था देव ने कहा कि जब हम कभी श्री राजेंद्र दानी जैसे किसी कथाकार की कहानियाँ सुनते हैं तो हम कहीं-न-कहीं उससे जुड़ जाते हैं। राजेंद्र दानी जी ने बताया कि उनके घर में ही साहित्यिक वातावरण मौजूद था और वहीं से उन्हें पढ़ने की आदत पड़ी। उन्होंने सर्वप्रथम कॉलेज की पत्रिका के लिए एक रोमांटिक कहानी लिखी थी। हरिशंकर परसाई जी ने भी उनकी कहानी की प्रशंसा की थी जिससे उत्साहवर्धन हुआ। तदनंतर, उन्होंने स्वरचित कहानी 'पतंग' का वाचन किया। कहानी आत्मकथात्मक और संस्मरणात्मक शैली में लिखी गई थी जिसमें बीते समय की गृह-वापसी की स्मृतियों को कुरेदा गया है। टैक्सी में वार्तालाप करते एक संयुक्त परिवार की परिस्थितियों, समस्याओं और व्यक्तिगत अनुभवों को मार्मिक ढंग से उकेरा जाता है जिनसे आम आदमी स्वयं को बखूबी संबद्ध कर सकता है।

डॉ. शंभू गुप्त ने कहा कि यह कहानी भूमंडलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में संबंधों और रिश्तों को बयां करती है। यह कहानी 40 वर्षों के सफरनामे का विवरण हमारे सामने रखती है। हम जहाँ पहुंचे हैं वहाँ आकाश समाप्त हो गया है अर्थात जीवन की उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं। मंच की अगली वक्ता डॉ॰ रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि दानी जी की कहानियों में न तो किसी पर्यटन-यात्रा का ब्योरा मिलता है, न ही पत्रकरिता के किसी अन्वेषण का चौकाने वाला वृत्तांत मिलता है। वह रहस्यमय ख़ामोशी के साथ नेपथ्य में रहकर कहानियाँ लिखते हैं। डॉ॰ रोहिणी ने 'पतंग' कहानी की समीक्षा में कहा कि यह कहानी लोगों की आधुनिक व्यस्तताओं में भी उनकी मनुष्यता को जीवित रखे हुए है।

अगले चरण में राजेंद्र दानी जी की सुपुत्री और ब्रिटेन निवासी कवयित्री तिथि दानी ने बताया कि उनके पिता एक अंतर्मुखी और संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी हैं। वह अपनी अनकही बातों को अपनी रचनाओं में उकेरते हैं। दानी जी की कहानियों के संबंध में अमेरिका से सुप्रतिष्ठित कथाकार अनिल प्रभा ने कहा की उनकी कहानियों को रुक-रुक कर कई बार पढ़ना पड़ता है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ॰ लीलाधर मंडलोई ने कहा कि दानी जी ने कथा की दुनियाँ में एक लंबा जीवन व्यतीत किया है और आज भी वह एक सक्रिय कथाकार हैं। हमारे असमतल जीवन, समाज और समय में सभी को निजी और सामाजिक जीवन में अपने हिस्से का आसमान नहीं मिलता है। दानी जी अपनी कहानियों में कोई भी ऐसी ज़गह नहीं छोड़ते हैं जहाँ से उनकी वैचारिक भूमि पर किसी भी प्रकार की तोहमत लग सके। वह अपनी कहानियों में राजनीतिक और सामाजिक पक्षों, आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता के बीच तदात्म्य जोड़ने की कोशिश करते हैं। वह अपनी ज़िंदग़ी जीते हुए लिखते हैं और जीवन जीने और कथा लिखने को एकात्म कर देते हैं। कार्यक्रम का समापन 'वातायन-यूके' की संस्थापक और प्रख्यात प्रवासी साहित्यकार सुश्री दिव्या माथुर के धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ।

(प्रेस रिपोर्ट-डॉ. मनोज मोक्षेंद्र)

विश्व परिक्रमा

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

जकार्ता में आसियान के लिए भारतीय मिशन ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) और आसियान मुख्यालय के साथ मिलकर 21 जून 2024 को जकार्ता स्थित आसियान मुख्यालय परिसर में, 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया। आसियान में भारत के राजदूत ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रतिभागियों का स्वागत किया और अपने भाषण में कहा कि योग सभी के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक व्यापक साधन है। उनका कहना था कि समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के अलावा, योग सामाजिक मूल्यों और समुदाय की भावना को भी बढ़ावा देता है। इस अवसर पर आसियान के महासचिव महामहिम डॉ. काओ किम होर्न ने इस आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। आसियान के सामुदायिक और कॉर्पोरेट मामलों के उप महासचिव महामहिम श्री नारायण एस। सोप्राप्टो ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर शिरकत की और सभी आसियान सदस्य देशों में योग के अभ्यास के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी तथा व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिए योग के लाभों पर जोर दिया।

ब्रिटेन में लेस्टर शहर में योग दिवस पर भारतीय उच्चयोग के काउन्सिल जनरल श्री अमन बंसल भी योग दिवस के आयोजन में शामिल हुए।ब्रिटेन में ही के नाटिंघम में योग दिवस बुलेटन पार्क में मनाया गया। वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार जया वर्मा ने भी यहाँ योग दिवस में सक्रिय भागीदारी की। इसी तरह आस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया।

इसी क्रम में मेलबोर्न क्रिकेट ग्राउंड में योग दिवस के उपलक्ष में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रवासी भारतीयों के साथ- साथ अन्य समुदाय के लोगों ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया। आस्ट्रेलिया के कैनेबरा में भारतीय उच्चायोग ने 'ओल्ड पार्लियामेंट हाउस' के प्रांगण में हाड़ कंपाने वाली ठंड के वातावरण में लगभग ढाई सौ प्रतिभागियों ने भाग लिया। सिडनी में समस्त भारतीय समुदाय योग दिवस को लेकर खासा उत्साहित था। भारतीय उच्चायोग ने सिडनी में योग दिवस का भव्य आयोजन किया।

उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र ने 11 दिसंबर, 2014 को संकल्प संख्या 69/131 के तहत 21 जून को "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, के रूप में घोषित किया। इसका उद्देश्य योग अभ्यास से स्वास्थ्य लाभों के बारे में दुनिया भर में जागरूकता बढ़ाना था। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना के लिए मसौदा भारत द्वारा प्रस्तावित किया गया था और रिकॉर्ड 175 सदस्य देशों द्वारा इसका समर्थन किया गया था।

बाल साहित्य के विविध आयामों पर विमर्श आयोजित

अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड ने बाल साहित्य कार्यक्रम की मासिक श्रृंखला में 21 जून को 'बाल साहित्य के विविध आयाम' विषय पर ऑनलाइन विचार विमर्श आयोजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत से जुड़े वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री नरेंद्र नीहार ने की। कार्यक्रम का संचालन नीदरलैंड से जुड़ी बाल साहित्यकार सुश्री ऋतु शर्मा ने किया। कार्यक्रम में बाल साहित्य समीक्षक डॉ. नागेश पाण्डेय '' सहित विभिन्न देशों से जुड़े बाल साहित्यकारों ने भाग लिया।

बौद्ध भिक्षु सितागु सयादाव डॉ. अशिन नयनिसारा को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई।सी।सी।आर।) के महानिदेशक श्री कुमार तुहिन ने म्यांमार के बौद्ध भिक्षु सितागु सयादाव डॉ. अशिन नयनिसारा को बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार- 2023 प्रदान किया।

भारतीय राजदूतावास में नेपाल और भारत के साहित्यकारों के सम्मान में कार्यक्रम

गत 7 जून को 'नेपाल-भारत साहित्य समारोह' का आयोजन भारतीय राजदूतावास, काठमांडू द्वारा किया गया। इसमें 'साहित्य संवाद' के अंतर्गत प्रख्यात साहित्यकार उषा ठाकुर को हिंदी सेवा के लिए भारत सरकार की ओर से सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर भारतीय दूतावास के द्वितीय सचिव श्री सत्येन्द्र दहिया भी शामिल हुए। इस कार्यक्रम में 'शेयर योर ह्युमैनिटी वैश्विक मंच' की संस्थापक एवं प्रवासी भारतीय साहित्यकार ,मोनी विजय सहित अनेक नेपाली और भारतीय साहित्यकारों ने भाग लिया।

हिंदी रायटर्स गिल्ड कनाडा ने रवीन्द्र नाथ ठाकुर जयंती मनाई

गत 20 जून को हिंदी रायटर्स गिल्ड कनाडा द्वारा गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर की जयंती पर एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की रचनाओं का पाठ तथा गायन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन प्रवासी साहित्यकार डॉ. शैलजा सक्सेना ने किया।

अंतरराष्ट्रीय काव्य गोष्ठी आयोजन

हिन्दी सभा व अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन शाखा नीदरलैंड द्वारा एक संयुक्त काव्य गोष्ठी का विधिवत आयोजन किया गया। गोष्ठी के मुख्य अतिथि, लंदन के लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा थे। बेल्जियम के प्रसिद्ध ग़ज़लकार व वरिष्ठ पत्रकार कपिल कुमार ने अध्यक्षीय दायित्व संभाला।

काव्य गोष्ठी में उपस्थित त्रिनिदाद से शिव कुमार निगम, लंदन से वरिष्ठ कवयित्री शन्नो अग्रवाल, जर्मनी की शिक्षाविद व कवयित्री डॉ॰ क्षिप्रा शिल्पी श्रीवास्तव, इंदौर से वरिष्ठ पत्रकार डॉ॰ सुनीता श्रीवास्तव, भारत से कवि विजय तिवारी, सुनीता श्रीवास्तव, सरोज आर्य, जयंता शर्मा, सिने निर्देशक राजेन्द्र शर्मा, नीदरलैंड से उर्सिला जरबन्धन, सूरीनाम से सांद्रा लुटवान, सिंगापुर के युवा साहित्यकार विनोद कुमार दुबे आदि के गीत, ग़ज़लों, छंदों व दोहों से अंतरराष्ट्रीय काव्य गोष्ठी सफल रही। लंदन से वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अरुणा अजितसरिया, वरिष्ठ कथाकार अरुण सब्बरवाल, नेपाल से वयोवृद्ध साहित्यकार चन्द्र मणि, सुनीता तिवारी, सोनू पत्रकार आदि सहभागी हुए। विश्व हिन्दी सभा के अध्यक्ष संजय 'अनंत' व अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन शाखा की अध्यक्ष डॉ॰ ऋतु शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कहानी पाठ का आयोजन

गत 19 जून को साहित्य अकादमी ने कहानी पाठ का आयोजन किया। इस आयोजन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध कथाकार चंद्रकांता ने की। कहानी पाठ में प्रतिभाग करने वाले कथाकार थे- सुमित सक्सेना लाल, सुनीता तथा वंदना गुप्ता।

हिंदी अकादमी दिल्ली ने आयोजित किया 'यशपाल: क्रांति से कलम तक' कार्यक्रम

गत 28 जून को हिंदी अकादमी दिल्ली ने 'यशपाल :क्रांति से कलम तक' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रदीप पन्त, महेश दर्पण, चमनलाल आदि वरिष्ठ पत्रकार और लेखको के साथ साथ यशपाल के सुपुत्र वरिष्ठ प्रवासी लेखक एवं पत्रकार आनन्द जी ने भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी अकादमी दिल्ली के सचिव संजय कुमार गर्ग ने महान क्रन्तिकारी एवं सुप्रसिद्ध लेखक यशपाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रकाशन विभाग ने यशपाल की पुस्तक 'क्रांति से कलम तक' का प्रकाशन किया है। पत्रकार प्रदीप पन्त और साहित्यकार– लेखक चमनलाल ने यशपाल के जीवन के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। यशपाल जी के पुत्र आनन्द ने पिता के साथ अपने संस्मरणों को याद करते हुए कहा कि यशपाल जी का लेखन सोद्देश्य था। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी अकादमी के उपसचिव ऋषि कुमार शर्मा ने कहा हिंदी अकादमी दिल्ली ,साहित्य और संस्कृति को समर्पित विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित कार्यक्रमों का आयोजन कर सदैव हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए तत्पर रही है।

तीन अप्रवासी साहित्यकारों सहित कुल बत्तीस विभूतियाँ मध्य प्रदेश शासन द्वारा सम्मानित

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्टता, सृजनात्मकता एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए घोषित सम्मानों में श्रीलंका की अतिला कोतलवाल को 2022 का राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान, कनाडा में निवास कर रही सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ. हंसा दीप को 2022 के राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान, तथा अमेरिका में रह रहे अनुराग शर्मा को 2023 के राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान हेतु चयनित किया गया। इनके अतिरिक्त उनतीस भारतीय साहित्यकारों के लिए भी राष्ट्रीय एवं राज्य पुरस्कार प्रदान किये जाने की घोषणा की गयी।

साहित्य अकादमी में हुआ 'बात बस्तर की' पुस्तक का लोकार्पण

यश पब्लिकेशन दिल्ली, द्वारा प्रकाशित, लेखिका डॉ. अंजली कुमारी की आदिवासियों के जीवन के विविध आयामों पर प्रकाश डालती पुस्तक ' बात बस्तर की' का लोकार्पण 12 जून को साहित्य अकादमी सभागार में किया गया। इस पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, प्रख्यात लेखक राजीव रंजन प्रसाद, राजनेता सतीश उपाध्याय, यश पब्लिकेशन के प्रबंध निदेशक जतिन भारद्वाज तथा लेखिका डॉ. अंजली कुमार की उपस्थिति रही।

राष्ट्रपति भवन में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

गत 12 जून को राष्ट्रपति भवन के अधीक्षण अभियंता कार्यालय, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा राजभाषा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य एवं नागरी लिपि परिषद नयी दिल्ली के महामंत्री डॉ. हरी सिंह पाल मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। कार्यशाला का संयोजन राजभाषा संपर्क अधिकारी श्रीमती स्वाति तिवारी ने किया।

विष्णु प्रभाकर के उपन्यास 'आवारा मसीहा' के पचास वर्ष पूर्व होने के उपलक्ष में आयोजन

गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा और विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान द्वारा संचालित सन्निधि संगोष्ठी, ने नयी दिल्ली में प्रख्यात उपन्यासकार विष्णु प्रभाकर की कालजयी कृति 'आवारा मसीहा' के पचास पूर्ण होने के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया।' कार्यक्रम में वरिष्ठ व्यंग्यकार सुभाष चंदर ने 'आवारा मसीहा' को कालजयी कृति बताते हुए कहा कि वर्तमान में भारतीय लेखक विदेशी बिंबों और प्रतीकों में खो गए हैं। इन दिनों ज्यादातर जीवनी लेखक जिनके जीवन पर किताब लिखते हैं, वे उनकी महानता के यशोगान करने में कोई कमी नहीं छोड़ते किन्तु उनके भीतर के सामान्य आदमी को सामने नही ला पाते हैं। यद्यपि 'आवारा मसीहा 'में ऐसा नहीं हुआ है। समारोह में साहित्य एवं समाज सेवा की विभिन्न विभूतियों को सम्मानित किया गया। विनय विक्रम सिंह और सुमन शर्मा संगीत के लिए सम्मानित हुए। साहित्यकार राजेश सिंह नेगी, पुष्पा और राम मोहन राय आदि को विष्णु प्रभाकर राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया। सभी अतिथियों का स्वागत विष्णु प्रभाकर के पुत्र एवं प्रसिद्ध साहित्यकार अतुल प्रभाकर ने किया।

डेड एंड (कहानी संग्रह)

लेखक : पद्मेश गुप्त

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन

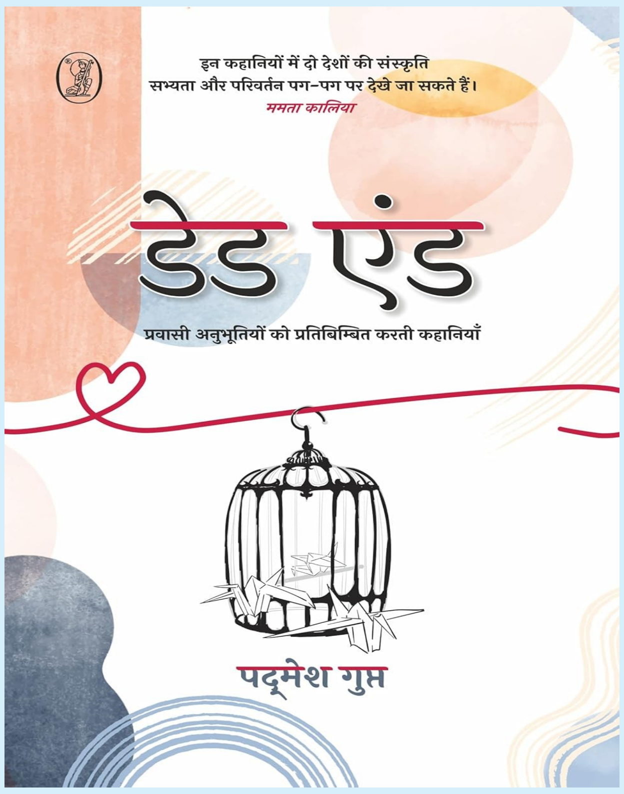

पिछली सदी में भारत से ब्रेन ड्रेन के दुष्परिणाम का सुपरिणाम विदेशों में हिन्दी का व्यापक विस्तार रहा है। विस्थापित प्रवासियों के परिवार जन भी उनके साथ विदेश गये। उनकी साहित्यिक अभिरुचियाँ वहाँ प्रस्फुटित हुईं। उन्होंने मौलिक लेखन किया और हिन्दी पत्र- पत्रिकाओं का प्रकाशन विदेशी धरती से शुरु किया। सोशल मीडिया के माध्यम से उन छोटे -बड़े और बिखरे प्रयासों को हिन्दी साहित्य जगत ने महत्व दिया। प्रवासी रचनाकारों की सक्षम आर्थिक स्थिति के चलते भारत के नामी प्रकाशनो ने साहित्य के गुणात्मक मापदण्डो को किंचित शिथिल करते हुये भी उन्हें हाथों-हाथ लिया। डॉ॰ पद्मेश गुप्त, ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के सक्षम और बहुविध हिन्दी रचनाकार हैं। मूलत: वे कवि हैं किन्तु उनकी कहानियाँ भी बेहद प्रभावी हैं। हाल ही में लंदन बुक फेयर में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में पद्मेश गुप्त के कहानी संग्रह 'डेड एंड' का विमोचन हुआ था। इस संग्रह में कुल नौ कहानियाँ-अस्वीकृति , औरत प्रेम सिर्फ एक बार करती है, डेड एंड, इंतजार, कशमकश, तिरस्कार, तुम्हारी शिवानी, कब तक और यात्रा सम्मिलित हैं।

कहानी "अस्वीकृति, में ई -मेल, बिछड़े प्रेमियों राजीव और अनीशा को फिर से मिलवाने का माध्यम बनता है। इस तरह का नया प्रयोग समकालीन कहानियों में नवाचारी और अपारंपरिक ही कहा जायेगा। कहानी "औरत प्रेम सिर्फ एक बार करती है" में पद्मेश गुप्त का कवि उनके कहानीकार पर हावी दिखता है। कहानी प्रेम त्रिकोण को नवीन स्वरूप में रचती है। 'डेड एंड' कहानी के गहन भाव और सुघड़ शिल्प ने पद्मेश गुप्त के कहानी बुनने के कौशल को उजागर किया है। हिन्दी कहानी के अंग्रेजी शब्दों के शीर्षक से विदेशों में बदलते हिन्दी के स्वरूप का आभास भी होता है। इंतजार वर्ष 2006 में लिखी गई पुरानी कहानी है। कहानी का ट्विस्ट और चरमोत्कर्ष है कि दीपक को एक पत्र बेड के पास मिलता है जिसमें लिखा था ... मैं तुम्हारे जीवन से सदा के लिये जा रही हूँ , मैं राजेश से विवाह कर रही हूं ... शालिनी। कहानी 'कब तक' आज के परिदृश्य में प्रासंगिक है। ये कहानियाँ स्वतंत्र प्रेम कथायें हैं। पद्मेश की कहानियाँ भी पाठक के दिल तक पहुँच बनाती हैं। कशमकश, संग्रह की सर्वाधिक लंबी कहानी है जिसमें कथानक का निर्वाह उत्तम तरीके से हुआ है। तिरस्कार कहानी के अंश रोमांचकारी हैं। 'कब तक' मिली-जुली संस्कृति के टकराव की व्याख्या करती है। यात्रा में लेखक के आध्यात्मिक चिंतन का परिचय मिलता है " आत्मा अमर है , शरीर वस्त्र। आत्मा शरीर बदलती है, नया जन्म होता है।

कहानी में रुचि रखने वालों के लिए 'डेड एंड', शब्दों में बाँधते हुये प्रेम को व्यक्त करता, नये वैश्विक बिम्ब बनाता, रोचक कहानी संग्रह है। सरल, सहज और खिचड़ी भाषा में बातें करता यह कहानी संग्रह समकालीन वैश्विक परिदृश्य को अभिव्यक्त करता पठनीय और संग्रहणीय है। वाणी प्रकाशन से सौ पृष्ठों का यह प्रथम संस्करण सीधे अमेजन पर सुलभ है।

प्रस्तुति : विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल

विनायक दामोदर सावरकर नायक बनाम प्रतिनायक

लेखक : कमलाकांत त्रिपाठी

प्रकाशक : किताबघर प्रकाशन

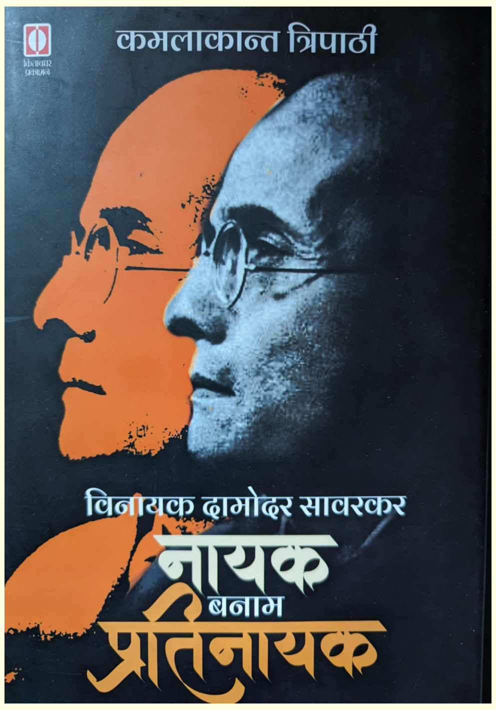

सावरकर एक अत्यंत सक्रिय क्रान्तिकारी के साथ -साथ स्वयं बहुआयामी लेखक और प्रतिभाशाली रचनाकार थे। वर्ष 1883 में 28 मई को जन्मे सावरकर ने लगभग 83 वर्ष की उम्र में 26 फरवरी 1966 को अंतिम साँस ली। उनकी मृत्यु तक लोगों में कोई प्रकट मनोमालिन्य नहीं था किन्तु पिछले एक दशक में तथ्यविहीन मिथ्यापवाद चला। देश के एक ही इतिहास पुरुष को कुछ लोग नायक तो कुछ प्रतिनायक क्यों समझते हैं? प्रस्तुत पुस्तक का लक्ष्य, सावरकर के संघर्षमय जीवन के कुछ मुद्दों पर सायास उत्पन्न किए गए विवाद के घटाटोप से उन्हें मुक्त करना है। इसमें राष्ट्रीय जीवन में उनके तात्विक योगदान के समग्र व वस्तुपरक आकलन का विनम्र प्रयास है। इस पुस्तक में सावरकर से संबन्धित राजनीति प्रेरित क्षुद्रीकरण के सुनियोजित अभियान से उत्पन्न भ्रम का तथ्यपरक परीक्षण किया गया है और वस्तुगत विमर्श द्वारा उसके समाहार का निष्ठावान उपक्रम है।

वास्तविकता यह है कि भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन की मुख्य धारा के स्खलन से एक भयावह रिक्ति उत्पन्न हुई थी जिसके पीछे कांग्रेस नेतृत्व का हवाई आदर्शवाद एवं ऐतिहासिक यथार्थ की समझ का दुर्भाग्यपूर्ण अभाव था। सावरकर ने उस रिक्ति को भरने का ऐतिहासिक दायित्व निभाया। उस रिक्ति के कई जटिल कारण थे जो कांग्रेस और मुस्लिम लीग के उदभव और विकास की परस्पर विरोधी ऐतिहासिक धाराओं में अनुस्यूत थे। सावरकर के नेतृत्व में हिन्दू महासभा को इस भूमिका के निर्वाह में लीग के साथ -साथ कांग्रेस से भी द्वंद का सामना करना पड़ा किन्तु इस प्रक्रिया में सावरकर नीत महासभा के सक्रिय होने में काफी विलंब हो चुका था। लिहाजा, आजादी के साथ रक्त रंजित विभाजन को रोका नहीं जा सका जिसने इस उप महाद्वीप के भविष्य को दीर्घकालीन अशांति और हिंसा के भंवर में डाल दिया। प्रस्तुत पुस्तक इस त्रासदी के उत्स के खुलासे का सत प्रयत्न है।

भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और लोकपाल पद से सेवानिवृत्त लेखक श्री कमलाकांत त्रिपाठी द्वारा अप्रतिम अध्यवसाय से पुस्तक में सात पर्व - क्रांति ,यातना,हिन्दू संगठन,हिन्दू महासभा,भारत विभाजन, उन्माद और अंत में समापन रखे गए हैं जिनमें चौहत्तर अध्याय हैं। किताब घर ,नई दिल्ली द्वारा हिन्दी में प्रकाशित यह पहली अनूठी पुस्तक पठनीय, अनुकरणीय, संग्रहणीय,समादरणीय और अभिनंदनीय है। सावरकर की यश: एवं बेरक्त काया अमर रहकर वीरता और उदात्त राष्ट्रभक्ति उत्प्रेरित करती रहेगी।

प्रस्तुति – डॉ॰जयशंकर यादव

गंध - स्पर्श

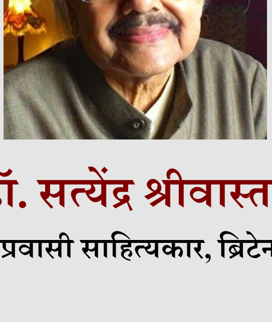

डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव

(प्रवासी साहित्यकार, ब्रिटेन)

यह फूल
अपनी सुगंध को
कुछ देर पहले तक
पत्तियों में बांधे हुए था
स्निग्ध हवा का एक झोंका आया
अब पत्तियां झर रही हैं
और खुशबू बिखर रही है,
जमीन पर
घासों को
इस कदर
खिलखिलाते
पहले कभी नहीं देखा था।

(धरती एक पुल कविता संग्रह से)

साक्षात्कार

भारतीय डायस्पोरा विश्व में भारतीय समाज का विस्तार है

-----श्याम परांडे

नागपुर में जन्मे श्री श्याम (कृष्ण गोविन्द) परांडे, 'सेवा भारती इंटरनेशनल' के संस्थापक,ग्लोबल कोर्डिनेटर , 'अंतरराष्ट्रीय संबंध परिषद' के अन्तरराष्ट्रीय महासचिव तथा जाने माने समाज सेवी हैं। पिछले चार दशक से अनिवासी भारतीयों और प्रवासी समुदाय के बीच सक्रिय श्री परांडे से 'वैश्विक हिंदी पत्रिका 'के लिए श्री अरविन्द पथिक ने खास बातचीत की। प्रस्तुत है इस साक्षात्कार के प्रमुख अंश।

अरविंद पथिक : सिविल इंजीनियर के तौर पर प्रारम्भ किए गए अपने सफल कैरियर को छोड़कर आप अचानक समाज सेवा के क्षेत्र में कैसे आ गये?

श्याम परांडे : वर्ष 1997 में19 नवम्बर को आंध्र प्रदेश में भयंकर तूफान आया।आंध्रप्रदेश एवं वर्तमान तेलंगाना के कृष्णा, गुंटूर और गोदावरी आदि जिले इस तूफ़ान से विशेष रूप से प्रभावित हुए। दस हज़ार से अधिक लोग मारे गये तथा जन-धन की अपार हानि हुई। मैं उस आपदा काल में वहां सेवा करने गया। वहाँ मैंने चार गाँव बसाये और यथा संभव सहायता की। सेवा कार्य के लिए ही मैंने सिविल इंजीनियर की अपनी नौकरी छोड़ दी। आंध्र प्रदेश में 17-18 वर्ष काम किया फिर मैं दिल्ली आ गया। दिल्ली में डायस्पोरा के लिए कार्य करने के क्रम में 1997 में 'सेवा इंटरनेशनल' की स्थापना और रजिस्ट्रेशन कराकर उसका कार्य प्रारम्भ किया। वर्ष 2013 में बालेश्वर अग्रवाल जी के निधन के पश्चात् 'अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद' की जिम्मेदारी भी मुझ पर आ गयी। विगत ग्यारह वर्षों से मैं 'अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद' के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री के रूप में काम कर रहा हूँ। 'सेवा इन्टरनेशनल' का भी मैं ग्लोबल कोआर्डिनेटर हूँ।

अरविंद पथिक : स्वामी विवेकानन्द के उद्घोष 'नर सेवा, नारायण सेवा' को आपने आत्मसात किया है। स्वामी जी के साथ साथ आपको किन -किन महापुरुषों ने प्रभावित किया ?

श्याम परांडे : स्वामी विवेकानन्द जी आज भी भारतवासियों ,विशेष रूप से युवकों को प्रेरणा देते हैं। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और महात्मा गांधी भी स्वामी विवेकानन्द से प्रेरित हुए। स्वामी जी के हिन्दू धर्म के बारे में बताने से पूर्व, पाश्चात्य जगत हिन्दू धर्म के वास्तविक स्वरूप के बारे में जानता ही नहीं था। किन्तु वह हिन्दू धर्म को अपमानित करने, हिन्दुओं को कुचलने और हिन्दुओ को धर्मान्तरित करने पूरी ताकत से लगा हुआ था। इस काम में लगे ईसाई मिशनरियों को यूरोपीय और अंग्रेज सरकार की पूरी -पूरी मदद प्राप्त थी। इस कारण पाश्चात्य जगत में हिन्दू धर्म की छवि बहुत गलत थी। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म की सही तस्वीर विदेशियों के समक्ष रखी। स्वामी जी के बाद बड़ी मात्रा में तत्वचिंतक और साधू संत विदेश गये और उन्होंने हिन्दू धर्म की सही तस्वीर विश्व के समक्ष रखी। स्वामी विवेकानन्द जी तथा उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस से प्रभावित होकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार हों या फिर द्वितीय सर संघ चालक श्री माधव सदाशिवराव गोलवलकर यानी श्री गुरूजी काफी प्रभावित थे। स्वामी विवेकानन्द जी की प्रेरणा से युवक राष्ट्र निर्माण में जुड़ते गये।मैं इन सभी महापुरुषों से प्रभावित हूँ।

अरविंद पथिक : राष्ट्र निर्माण में 'सेवा इंटरनेशनल' और 'अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद' की भारत और भारत के बाहर भारतीयों के बीच क्या भूमिका है ?

श्याम परांडे : भारतीय डायस्पोरा विदेश में भारतीय समाज का विस्तार या कहें एक्सटेंशन है। भारतीय समाज सर्वत्र सामंजस्य सहित अपनी संस्कृति के साथ जीता है। भारतीय जहाँ भी गये हुए हैं , वे भारतीय जीवन मूल्यों के साथ जीते हैं।पहले तो विदेश में बसे भारतीयों के पास अपने मन्दिर तक नहीं थे ,पर उन्होंने अपनी संस्कृति को छोड़ा नहीं। भारतीय मूल वाले देशों (पीपल ऑफ़ इन्डियन ओरिजन कंट्रीज) में जो भी लोग गये उन्होंने हनुमान चालीसा हो, रामचरित मानस हो या तिरुवल्लुर की रचनाएँ हों, इन्हें तमाम दबावों, प्रलोभनों और प्रताड़नाओं के बाद भी नहीं छोड़ा। प्रवासी भारतीयों को धर्मान्तरित करने के लिए तमाम प्रलोभन दिए गये ,दबाव डाले गये पर वे झुके नहीं। आज वे लोग उभरकर आये हैं, और उस देश के विकास को प्रभावित और सम्पन्न कर रहे हैं। चाहे अमेरिका जैसा समृद्ध देश हो या कोई अन्य देश, सभी जगह भारतवंशी उस देश के विकास और समृद्धि में बड़ा योगदान दे रहे हैं। जी-20 में गत वर्ष जो भी देश भारत आये, वे प्रभावित होकर गये। नागपुर में 'जी-20 सिविल' के आयोजन में मैंने प्रमुख भूमिका निभाई। सभी देशों के प्रतिनिधि अपने स्वागत से अभिभूत थे। पूरा नागपुर शहर सजाया गया था। नागपुर सहित समूचे देश ने इन देशों से आये लोगों का खुले दिल से स्वागत किया।ऐसे स्वागत से अभिभूत होकर उनकी प्रतिक्रिया थी कि ऐसे स्वागत की हमने कल्पना भी नहीं की थी।

अरविंद पथिक : कृपया 'जी -20' , में आप अपनी भूमिका के बारे में बताएँ ?

श्याम परांडे : मैं दोनों ही संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में जी -20 से जुड़ा था।जी -20 के मंच पर हमने सेवा के विचार को रखा। सेवा निस्वार्थ होती है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने 'सेवा इन्टरनेशनल ' की ओर से जो भी प्रस्ताव रखे, वे जस के तस शामिल किये गये। दूसरा विषय 'अंतरराराष्ट्रीय सहयोग परिषद' का 'भारतीय डायस्पोरा' का था। 24 घंटे तक अनवरत कार्यक्रम चला।पूरे विश्व से भारतीय डायस्पोरा ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। आज तीन करोड़ से ज्यादा भारतीय विदेश में हैं। हमने पूरे विश्व के भारतीयों को 'वसुधैव कुटुम्बकम' की थीम से जोड़ा। भारत से बाहर रहने वाला, भारतीय समाज वहाँ रहते हुए भी भारतीय है। भारतीय कहीं भी रहें, अपनी प्रेरणादाई भारतमाता को भूलते नहीं हैं।

अरविन्द पथिक : आपके विजन और दृष्टि की झलक जी-20 के आयोजन में साफ दिखी। कृपया भविष्य को लेकर अपनी योजनाओं के बारे में बताएँ ?

श्याम परांडे : जो कार्य अभी किया जा रहा है, उसे भविष्य में भी जारी रखना ही प्राथमिकता है। 'सेवा इंटरनेशनल' अभी छब्बीस देशों में काम कर रहा है। हम चाहते हैं कि अगले पाँच वर्षों में हम इसके कार्य को पचास देशों तक ले जाएँ। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद का भी प्रयास है कि हम विदेश मंत्रालय से मिलकर डायस्पोरा के लिए काम कर सकें। हम यू। एन।ओ। के 180 सदस्य देशों में पहुँचे हैं। हमारा प्रयास है कि हम शीघ्र ही सभी 186 सदस्य देशों तक पहुँचे।जहाँ बहुत कम जनसंख्या है,हम उन देशों में भी पहुँच रहे हैं। कई देशों की जनसंख्या एक लाख से कम है, हम वहां तक भी पहुँच रहे हैं।हमारी कोशिश है कि भारतीय डायस्पोरा जहाँ कहीं भी है, भारत से जुड़ जाए।

अरविंद पथिक : अंत में आप हमारे पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

श्याम परांडे : भारतीय डायस्पोरा के लिए पहले यह कहा जाता था कि यह 'ब्रेन ड्रेन,' है किन्तु हमारे प्रधानमन्त्री मोदी जी ने इसे 'ब्रेन गेन है' कहना प्रारंभ किया है। इसे साकार करने की आवश्यकता है। इसके लिए यहाँ के सिस्टम को तैयार होने की ज़रूरत है। बड़ी मात्रा में भारतीय वैज्ञानिक और अन्य विशेषज्ञ वापस आना चाहते हैं। बहुत से लोग जो बीस - तीस वर्ष, तक विदेश में रह चुके हैं, वे भी वापस आना शुरू हो गये हैं।उनके लिए यहाँ वातावरण बनाने की ज़रूरत है। इस रिवर्स माइग्रेशन को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। विदेशों में भारतीय कला के प्रति उत्सुकता और भारतीय मूल्यों के प्रति सम्मान काफी बढ़ा है। भारतीय कला और संस्कृति के प्रति अनुराग रखने वाले युवक रोज ही गीता पाठ करते हैं। भारतीय अध्यात्म का प्रसार करने वाले ये युवक ही भविष्य में भारतीयता के प्रेरक और प्रवक्ता होंगे।इस तरह का वातावरण और आगे बढ़ना चाहिए, और बनना चाहिए।

अरविंद पथिक : आपने विस्तार से ' भारतीय डायस्पोरा'सहित तमाम विषयों पर हमसे बात की, आपका बहुत बहुत धन्यवाद ,नमस्कार।

श्याम परांडे : आपका भी धन्यवाद, नमस्कार।

साक्षात्कारकर्ता - अरविंद पथिक

संरक्षक
अनिल शर्मा 'जोशी'

संपादक
डॉ. जयशंकर यादव

संपादन सहयोग
प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग
कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर,
नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए
ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109